चोरी हुई वस्तुप्राप्ति प्रश्न

पृच्छक जिस दिन पूछने आया हो उस

तिथि की संख्या, वार संख्या, नक्षत्र संख्या और लग्न संख्या (जिस लग्न में प्रश्न किया हो उसकी संख्या, ग्रहण करनी चाहिए। मेष में 1, वृष में 2, मिथुन में 3, कर्क में 5 आदि) को जोड़ देना चाहिए। इस योगफल में तीन और जोड़कर जो संख्या आए, उसमें पाँच का भाग देना चाहिए।

(तिथि संख्या + वार संख्या + नक्षत्र संख्या + लग्न संख्या = योगफल + 3 = कुलयोग / 5 = शेष)

1 शेष बचे तो चोरी गयी वस्तु पृथ्वी में,
2 शेष बचे तो चोरी गयी वस्तु जल में,
3 शेष बचे तो चोरी गयी वस्तु आकाश में (ऊपर किसी स्थान पर रखी हुई),
4 शेष बचे तो चोरी गयी वस्तु राज्य में (राज्य के किसी कर्मचारी नेली हैं)
5 शेष बचे तो चोरी गयी वस्तु ऊबड़-खाबड़ जमीन में (नीचे खोदकर रखी हुई) कहना चाहिए।

पृच्छक के प्रश्न पूछने के समय
स्थिर लग्न-(वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) हो तो चोरी गयी वस्तु घर के समीप,
चर लग्न- (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो चोरी गयी वस्तु घर से दूर किसी बाहरी आदमी के पास;
द्विस्वभाव- (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) हों तो कोई सामान्य परिचित नौकर, दासी आदि चोर होता है।

यदि लग्न में चन्द्रमा हों तो (चोरी गयीवस्तुअथवा चोर का निवास) पूर्व दिशा में,
दशम में चन्द्रमा हो तो दक्षिण दिशा में,
सप्तम में चन्द्रमा हो तो पश्चिम दिशा में और
चतुर्थ में चन्द्रमा हो तो उत्तर दिशा में कहना चाहिए।

लग्न पर सूर्य और चन्द्रमा दोनों की दृष्टि हो तो अपने ही घर का चोर होता है।

पृच्छक की
मेष लग्न राशि हो तो ब्राह्मण चोर,
वृष हो तो क्षत्रिय चोर,
मिथुन हो ती वैश्य चोर,
कर्क हो तो शूद्र चोर,
सिंह हो तो अन्त्यज चोर,

कन्या हो तो	स्त्री चोर,
तुला हो तो	पुत्र, भाई अथवा मित्र चोर,
वृश्चिक हो तो	सेवक चोर,
धनु हो तो	भाई अथवा स्त्री चोर,
मकर हो तो	वैश्य चोर,
कुम्भ हो तो	चूहा चोर और
मीन लग्न राशि हो तो	पृथ्वी के नीचे चोरी गयी वस्तु होती है।

चरलग्न-(मेष, कर्क, तुला, मकर)	हों तो चोरी गयी वस्तु	किसी अन्य स्थान पर,
स्थिरलग्न-(वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ)	हों तो चोरी गई वस्तु	उसी स्थान पर (घर के भीतर ही)
द्विस्वभावलग्न-(मिथुन, कन्या, धनु, मीन)	हों तो चोरी गई वस्तु	घर के (आस-पास) बाहर कहीं।

मेष, कर्क, तुला और मकर लग्नराशियों के होने पर चोर का नाम	दो अक्षर का,
वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ लग्नराशियों के होने पर चोर का नाम	तीन-चार अक्षरों का एवं
मिथुन, कन्या, धनु और मीन लग्नराशियों के होने पर चोर का नाम	तीन अक्षरों का होता है।

अन्धलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में वस्तु की चोरी हुई हो तो	शीघ्र मिलती है।
मन्दलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी वस्तु	प्रयत्न करने से मिलती है।
मध्यलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी वस्तु	प्रयत्न करने से मिलती है या खोयी हुई वस्तु का पता बहुत दिनों में लगता है।
सुलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी वस्तु	कभी नहीं मिलती।

अन्धलोचन	नक्षत्रों में चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु	पूर्व दिशा में,
काण संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु	दक्षिण दिशा में,
चिपटलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु	पश्चिम दिशा में एवं
सुलोचन संज्ञक	नक्षत्रों में चोरी गयी या खोयी हुई वस्तु	उत्तर दिशा में होती है।

माघ पूर्वाफाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी	नक्षत्रों में खोई वस्तु	घर के भीतर;
हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और धनिष्ठा	नक्षत्रों में खोयी वस्तु	घर से दूर- 4,7,10,17,21,23,24,25,30,34,43,45 कोश की दूरी पर;
शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्रों में खोयी वस्तु		घर में या घर के आस-पास पड़ोस में ५० गज की दूरी पर एवं
कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा	नक्षत्रों में खोयी वस्तु	बहुत दूर चली जाती है और कभी नहीं मिलती।

यदि प्रश्नकर्ता

कपड़ों के भीतर हाथ छिपाकर प्रश्न करे तो	घर का ही चोर और
कपड़ों के बाहर हाथ कर प्रश्न करे तो	बाहर के व्यक्ति को चोर समझना चाहिए।

अंक	वार	राशि	नक्षत्र		तिथि
0					
1	रविवार	मेष	अश्विनी		शुक्ल-प्रतिपदा
2	सोमवार	वृष	भरणी		द्वितीय
3	मंगलवार	मिथुन	कृत्तिका		तृतीय
4	बुधवार	कर्क	रोहिणी		चतुर्थी
5	गुरुवार	सिंह	मृगशिरा		पंचमी
6	शुक्रवार	कन्या	आर्द्रा		षष्टि
7	शनिवार	तुला	पुनर्वसु		सप्तमी
8		वृश्चिक	पुष्य		अष्टमी
9		धनु	आश्लेषा		नवमी
10		मकर	मघा		दशमी
11		कुम्भ	पूर्वा-फाल्गुनी		एकादशी
12		मीन	उत्तरा-फाल्गुनी		द्वादशी
13			हस्त		त्रयोदशी
14			चित्रा		चतुर्दशी
15			स्वाति		पूर्णिमा
16			विशाखा		कृष्ण-प्रतिपदा
17			अनुराधा		द्वितीय
18			ज्येष्ठा		तृतीय
19			मूल		चतुर्थी
20			पूर्वाषाढ़ा		पंचमी
21			उत्तरा-षाढ़ा	अभिजित	षष्टि
22			श्रवण		सप्तमी
23			धनिष्ठा		अष्टमी
24			शतभिषा		नवमी
25			पूर्वा-भाद्रपद		दशमी
26			उत्तरा-भाद्रपद		एकादशी
27			रेवती		द्वादशी
28					त्रयोदशी
29					चतुर्दशी
30					अमावस्य

अन्य-मन्दलोचनादि नक्षत्र बोधक चक्र

मन्दलोचन या चिपिटलोचन	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तरा-षाढ़ा	शतभिषा
मध्यलोचन या काणलोचन	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वा-भाद्रपद
सुलोचन	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा-फाल्गुनी	स्वाति	मूल	श्रवण	उत्तरा-भाद्रपद
अन्धलोचन	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा-फाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती